

RN-11-4/R/75/93 (समाप्त)

216-

समजा वीरें वाफा रेव-पु, म० प्र० ग्वाठियर

मीजागी, मीजा रेवो, विजावा मी रामकृष्ण कुं
जिवाणी, मीजागी, वीरी सागर, लक्ष्मी ठ व
जिजा सागर -----वावेदिका

समाप्त

- १- नामकी माई तनय फेंद मीवास माई
- २- राजिन्द्रसिंह तनय कुलासिंह
- ३- कुंछाळ तनय चरप्रसाद
- ४- दुडी नंद तनय भावानदास
- ५- चौम प्रोड तनय दीनवधाळ गुखा

समी साकिन सागर लक्ष्मी व जिजा सागर (म० प्र०) -----वनावेदकमण

मिगराणी अंतर्गत धारा ५० म० प्र० पुरावस्व संस्था

वावेदिका निष्ठासिद्ध प्रार्थना करती है :-

- १- वावेदिका उक्त मीजागी वावेश मीमान अतिरिक्त कमिश्नर सागर संभाग सागर के प्रारण क्रमांक ४२५३७/६/२००० वावेश दिनांक ०५-२-२२ के फाईल होकर कर रही है ।
- २- प्रारण में वावेदिका द्वारा एक आवेदनपत्र अंतर्गत धारा १२५१२६ के अंतर्गत प्रस्तुत किया था कि मीजा सागर की सघरा नंबर २१० में उसका नाम अंकित नहान वा रहा है तथा कुछ राखवाते द्वारा भूमि विज्ञय के फावाउ उसी नाम का विज्ञोप कर दिया गया इससे उसका नाम उक्त सघरे में सम्मिलित रूप से अंकित कर दिया जा तथा लक्ष्मीठवार द्वारा दिनांक १५-१०-८७ को वावेदिका का आवेदन सारिण किया गया इस वावेश के विरुद्ध अपील फाइल की गई तथा जो अपील अनुविभागीय अधिकारी द्वारा दिनांक २६-३-९० में स्वीकृत की गई तथा उसके नाम को अंकित करने का वादेश दिया गया उक्त वादेश के विरुद्ध वावेदिका द्वारा द्वितीय अपील अतिरिक्त महोदय सागर के यहां की गई जो स्वीकार हुई उसी वादेश के विरुद्ध

20.1.17.

C.P. 20 01-2017

आदेशों में
 जो प्रकार का
 न तो आवेग
 है। यह
 जो लगे
 अथवा
 जो
 जो
 जो